# साहस 2018
# SAHAS 2018

dhanak

## STRENGTHENING ALLIANCES FOR HUMANITY AND SECULARISM

**Thank you!**

**We acknowledge and appreciate the year long and active association of each of our member couples and friends of Dhanak.**

**A very special thanks to**

**Shailaja & Zubair**
**Akanksha & Suaib**
**Danyal & Sumita**
**Shweta & Jamal**
**Kavita & Jamshed**
**Rajiv & Kashifa**
**Sumit & Azra**

**A special gratitude to Gayatri Sabharwal, Surender Kapur & Dr. Farhat**

प्यार नही देखता मजहब. Love transcends all boundaries

# About Dhanak

Dhanak of Humanity is a not-for-profit organization comprising mostly of interfaith/inter-caste couples. Dhanak started out as a support group in 2004 and got registered in 2012 under the Societies Registration Act.

Dhanak has evolved organically, and over the years it has emerged as a Champion organization working for the promotion of Right to Choice in the matters of Marriage and Relationships, and against Honour-Based Crimes in India. Dhanak is the only organization in India working on a spectrum of issues faced by interfaith couples.

Over the years Dhanak has touched the lives of over 700 couples. Dhanak's learnings are based on real-life experiences of these couples; be it dealing with their own value system and stereotypes, families or with administration and legal systems.

# Core Activities of Dhanak

### Aspiring Couples

Counselling & Guidance to Aspiring Couples

Legal Guidance and Aid to Aspiring Couples

Protection, Support and Financial aid to Couples in need

Facilitation for Marriage Solemnisation & Registration

### Inter-religious/Caste Couples and Families

Registration of Religious Marriage under Special Marriage Act

Reconciliation with Parents

Linkage with Support Group for Counselling
Perspective Building on interfaith living and Support System

Volunteering Opportunity

### Sensitisation and Awareness Buiding

Right to Choose

Against Honour Based Crimes

Marriage without Religious Conversion

Gender Equality in Relationships

Awareness on Provisions under the Special Marriage Act

### Advocacy & Networking

For Amendment of Special Marriage Act and changes in State Rules

Demand for an Act against Honour-Based Crimes

Demand for Homes for Couples for Security and Protection

CHAYAN : A consortium of organizations working on Right to Choose, convened by Dhanak

# अंतर्धार्मिक विवाहों में बच्चों की परवरिश का सवाल

- ज़मरूदा खांडे

बच्चे किसी भी शादी में ऐसे-ऐसे पहलू जोड़ देते हैं जिनके लिए कोई दंपति पहले से तैयार नहीं होते। इस मामले में अंतर्धार्मिक शादियां भी कोई अपवाद नहीं हैं। मुझे इस बात का एहसास शादी से पहले भी होने लगा था। मेरे जोड़ीदार और मेरे बीच शादी से पहले भी बच्चों के नामों को लेकर (और जाहिर है बहुत सारी दूसरी चीजों के बारे में भी) काफी चर्चाएं होने लगी थीं। यह देख कर हम दोनों को अचंभा भी होता था कि एक ऐसी शख्सियत के बारे में हम कितनी बहस कर रहे हैं जोकि अभी कई साल तक हमारे दरम्यान नहीं होगी। हमारे बीच खूब झगड़ा हुआ, खींचतान हुई, बहस-मुबाहिसे हुए और आखिकार हम एक सहमति तक पहुंच गए। मेरे खयाल में, पिछले १८ साल के दौरान अपनी शादी और बहुत सारी चीजों को हमने कमोबेश इसी तर्ज पर निभाया-चलाया है।

हमारी जैसी शादियों में लोग बच्चों की परवरिश कैसे करें... एक लाइन में इसका निचोड़ यह है : उनकी परवरिश भी अपने विश्वासों के अनुसार वैसे ही करें जैसे तमाम दूसरी चीजों को करते हैं!

हमारी शादी इसलिए हुई क्योंकि हम एक दूसरे को चाहने लगे थे। उस वक्त हमने धर्म की परवाह नहीं की। हम एक-दूसरे से मिले, हमारे बीच प्यार पनपा और तमाम चीजों के बावजूद हमने शादी कर ली। जब हमने जीवन साथी चुनने के समय धर्म की परवाह नहीं की तो बच्चों की परवरिश के सवाल पर हम इतनी परवाह क्यों करें?

इस सबके बाद भी, मुझे बड़ी साफगोई से ये बात कहनी पड़ेगी कि नास्तिक होने के बावजूद रजनीश और मैं, दोनों ही अपनी जिंदगियों से मजहब को पूरी तरह अलग रख पाने में कामयाब नहीं हुए हैं। हम मजहब और मजहबी अनुष्ठानों में यकीन नहीं रखते। न ही किसी रीति-रिवाज या अनुष्ठान को निभाते हैं। मगर हम दोनों धर्मों के त्योहार जरूर मनाते हैं। हम दोनों धर्मों के विश्वासों को भी मानते हैं।

अपनी शादी के पहले ही दिन से हम उन त्योहारों को मनाते रहे हैं जिनमें हमारा यकीन था। हमारे घर में आपको ईद का जश्न तो मिलेगा मगर रोज़े और कुर्बानी का यहां कुछ मतलब नहीं है। इसी तरह होली और दिवाली भी एक बड़े जश्न का सबब होते हैं मगर इन मौकों पर हम पूजा नहीं करते। न ही हम करवा चौथ और जन्माष्टमी मनाते हैं। हम महाराष्ट्र में रहे हैं लिहाजा हमारे बच्चों की मार्फत गणपति पूजा भी हमारी जिंदगी का एक बड़ा हिस्सा बन गई है। इसी तरह क्रिसमस भी हमारी जिंदगी का एक हिस्सा है।

हमने अपने बच्चों को अपने दोस्तों के घर जाकर किसी भी तरह के त्योहारों या धार्मिक उत्सवों में हिस्सा लेने से कभी नहीं रोका। बल्कि हम उन्हें इसके लिए उत्साहित करते हैं। हम इस बात का ख्याल रखते हैं कि अगर बच्चों को बुलाया जाता है तो हम उन्हें जरूर भेजें। और हमारे बच्चे भी इस बात को समझते हैं कि वे वहां क्यों जा रहे हैं।

हमारे बच्चों की उम्र इस वक्त ८ साल और १२ साल है और समय-समय पर हमें इस सवाल से जूझना ही पड़ता है - मैं क्या हूं?हिंदू या मुसलमान? रजनीश और मैं, हम दोनों ने इसका जवाब बहुत सरल रहने दिया है। हम उन्हें बताते हैं कि तुम्हारी मां जन्म से मुसलमान है और पिता का जन्म एक हिंदू परिवार में हुआ था। हम दोनों अलग-अलग धर्मों को मानने वाले परिवारों में पैदा हुए लेकिन हम दोनों गैर-धार्मिक हैं। हम धर्म के कुछ पहलुओं में यकीन रखते हैं और चाहते हैं कि तुम भी उन्हें अपनाओ। जब तक तुम बालिग नहीं होते तब तक तुम आधे हिंदू और आधे मुसलमान हो। उसके बाद तुम चाहे तो कोई भी धर्म अपना लेना। या नास्तिक रहना। वो तुम्हारी मर्जी का सवाल होगा।

एक और सवाल जो हमसे पूछा जाता है वह यह है - अगर हम सारे धर्मों में विश्वास रखते हैं तो हम क्रिस्मस क्यों नहीं मनाते। बच्चे बहुत होशियार होते हैं। असल में वे चाहते हैं कि सेन्टा क्लॉज़ हर साल उनके घर आया करे। खैर, इस पर भी हमारा जवाब सीधा सा है : हम हिंदू और इस्लाम धर्मों के साथ जुड़े बहुत सारे त्योहार मनाते हैं। इसके

अलावा तुम अपने दोस्तों के साथ चाहो तो कोई भी त्योहार मना सकते हो। ठीक वैसे ही जैसे ईद और दिवाली पर तुम्हारे दोस्त हमारे घर आते हैं! अभी तक हमारे बच्चों की आंखों में इस बात का फख्र दिखाई पड़ता है कि वे हिंदू भी हैं और मुसलमान भी और वे जब चाहे इनमें से कोई एक विकल्प चुन सकते हैं या दोनों को छोड़ सकते हैं।

कई बार हमारे सामने कुछ पेचीदा हालात भी पैदा हो जाते हैं। हाल ही में जब ट्रम्प ने अमेरिका में मुस्लिमों के आने पर पाबंदी लगा दी तो हमारा बेटा काफी बेचैन हो गया था। एक दिन उसने ऐलान कर ही दिया – मम्मी, अब हम अमेरिका नहीं जा पाएंगे।

मैंने पूछा – क्यों?
बेटा – तुम, मैं और सहर अब अमेरिका का नहीं जा सकते। हम मुसलमान हैं और वहां मुसलमानों के आने पर पाबंदी लगा दी गई है।
मैं – तकनीकी तौर पर तुम और सहर अपने डैडी के साथ अमेरिका जा सकते हो क्योंकि तुम्हारे पासपोर्ट पर लिखा है कि तुम हिंदू हो।
बेटा– वाकई?मगर क्यों!
मैं – देखो, जब तुम दोनों पैदा हुए तो हमने तय किया कि हम तुम दोनों का धर्म हिंदू ही लिखवाएंगे क्योंकि भारत में मुसलमान के मुकाबले हिंदू होना ज्यादा आसान है। इसके अलावा, दुनिया भर के हालात को देखकर भी हमें यही लगा कि हम तुम्हारा धर्म हिंदू लिखवा दें।
बेटा – अरे वाह, तुम तो बड़ी होशियार हो! मगर फिर भी हम वहां नहीं जाएंगे। मैं ऐसे किसी देश में नहीं जाऊंगा जहां तुम नहीं जा सकती।
मैं – जब वह मौका आएगा तो हम कोई रास्ता ढूंढ लेंगे। (वैसे भी हमारा अमेरिका जाने का दूर-दूर तक कोई इरादा नहीं था)।

एक और स्थिति पर गौर करें –
हम एक फिल्म देख रहे हैं जिसमें हिंदू धर्म में मृत्यु के बाद पार्थिव शरीर के अंतिम संस्कार का दृश्य दिखाया गया है।
सहर – मॉम, जब मैं मरूंगी तब मुझे भी क्या जलाया जाएगा?
मैं : तुम ये क्यों पूछ रही हो?
सहर – हिंदुओं में मरने के बाद जला देते हैं ना।
मैं – देखो, तुम चाहो तो कोई और तरीका चुन सकती हो। तुम चाहो तो दफन करने या बिजली से दाह संस्कार करने या किसी और तरीके से अपना अंतिम संस्कार करने का फैसला ले सकती हो।
सहर – अच्छा?क्या मैं खुद यह तय कर सकती हूं?
मैं – हां, ये पूरी तरह तुम पर है कि तुम क्या चाहती हो।

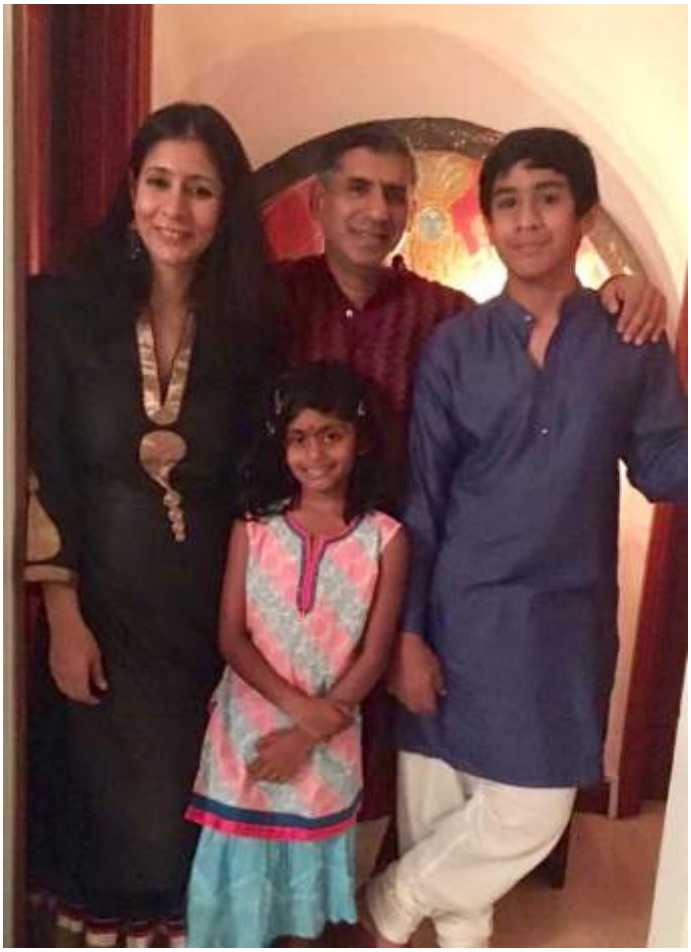

सहर – कितनी अच्छी बात है कि मैं हाफ-मुस्लिम हूं। मैं चाहूं तो दफन करने के लिए चुन सकती हूं। मैं जलने से बच जाऊंगी!
बच्चों को सही आदतें सिखाना हमेशा मेरी जिम्मेदारी रही है। वे अपने दादा-दादी और नाना-नानी व दूसरे रिश्तेदारों के घरों में कुछ चीजें खा सकते हैं और कुछ चीजें नहीं खा सकते। यह हकीकत उनकी परवरिश का हिस्सा रही है। वे इस बात को अच्छी तरह जानते हैं कि परिवार के किस दायरे में वे क्या कर सकते हैं और क्या नहीं कर सकते। हम नहीं चाहते कि जब वे अपने किसी रिश्तेदार के यहां जाएं तो उन्हें अटपटा महसूस हो।

मगर हां, बड़ों के पैर छूने जैसी कुछ चीजों पर हमारा भी ऐतराज है। चूंकि हम दोनों ही इस तरह की चीजों में यकीन नहीं रखते इसलिए हम अपने बच्चों को भी ये सब नहीं सिखाते। उन्हें अच्छी तरह सिखाया गया है कि वे जिससे भी मिलें वे गले मिलकर या हाथ मिलाकर या जैसे

भी सुविधाजनक लगे, वैसे उनका अभिवादन करें। उनके पास यह सहजता और छूट हमेशा है। रजनीश और मैं, हम दोनों ही इस पर समझौता नहीं करेंगे। पूजा के कमरे में या मंदिर-मस्जिद में सिर ढंकना सम्मान प्रदर्शित करने का एक ऐसा भाव है जिसको उन्हें अपनाना पड़ेगा हालांकि रजनीश इस नसीहत को भी बहुत पसंद नहीं करते। अगर आप पूजा के बाद प्रसाद लेते हैं और लाल टीका लगवाते हैं तो इस पर कोई बहस नहीं होगी। हमारे सामने बहुत छोटी-छोटी चीजें हैं जो बहुत मायने रखती हैं और जिन चीजों में हम यकीन रखते हैं वही अपने बच्चों को सिखाते हैं।

मगर और किसी भी चीज से ज्यादा हमारे बच्चे इस बात से अवगत हैं कि हमारी जिंदगियों में धर्म की क्या जरूरत है और उनका क्या मकसद होता है। उन्होंने रामायण और महाभारत के संक्षिप्त संस्करण पढ़े हैं। उन्होंने कुरान और बाइबिल की कहानियां पढ़ी हैं। उम्मीद है कि वे इस बात को जरूर समझ जाएंगे कि इन सारी बातों के क्या मतलब हैं।

जब [illegible]

आलसी जो सोया पड़ा था' वगैरह जैसी बातें बोलता है तो हमें अपने गुस्से पर काबू रखना पड़ता है। हम उस वक्त खुद को याद दिलाते हैं कि एक समय हम भी कुछ इसी ढंग से बात किया करते थे। शायद हम यह कह नहीं पाते थे या शायद हम खुशकिस्मत थे कि हम भारत में पैदा हुए जहां महाभारत और रामायण और ईद आपको पढ़कर नहीं सुनाए जाते। आप खुद-ब-खुद इनमें पैदा होते हैं, इनमें सांस लेते हैं। जैसे-जैसे आप बड़े होते हैं ये सब आपकी जिंदगी का लामहसूस हिस्सा बनते चले जाते हैं।

रजनीश और मैं, हम दोनों को लगता है कि जिंदगी में हमें अपने से बढ़कर कुछ चीजों में यकीन रखना चाहिए। एक ऐसी ताकत जो हमसे बड़ी हो और हमें जमीन से जोड़े रखे। हमारे लिए धर्म ही वह शक्ति है। यही हम अपने बच्चों को पढ़ाना चाहते हैं और भरसक कोशिश कर रहे हैं कि इसको वे अपनी जिंदगी में उतारें। हमारे घर में हर छोटी-बड़ी चीज पर खुल कर बात होती है और हमारा जोर हमेशा इसी बात पर रहा है - अच्छे और नेक इंसान बनो क्योंकि विनम्र और मानवीय होने से बेहतर और कुछ नहीं होता!

# वायज़ तू सच ही कहता है

**सहर ज़ैदी**

वायज़ तू सच ही कहता है
वो काफ़िर है! वो काफ़िर है!
मेरा खुदा है यक्ता ओ वाहिद
उसके देव हजार हुए
मेरा क़िब्ला बस काबा है
उसके तीरथ तो चार हुए
मैं झुक के सजादा करता हूँ
वो थाल सजाये पूजा के
वायज़ तू सच ही कहता है
वो काफ़िर है! वो काफ़िर है!
उसकी आँखें, लूटें ईमान
उसकी बातें माधहोश करें
क़दम चले, बस कुचा ए जाना
भूल गया मस्जिद का रस्ता
अब याद कोई नहीं आयत
कैसी नमाज़ और कौन सा कुरान
वायज़ तू सच ही कहता है
वो काफ़िर है! वो काफ़िर है!
पर ऐ वायज़ ज़रा यह भी तो सुन
अल्लाह यह खुद ही कहता है
मैं ही अव्वल मैं ही आख़िर
मैं ही सबको ख़लक़ किया
मैं दाता हूँ मैं पालक हूँ
मैं ही सब यह खेल रचा
फिर उसका खुदा और मेरा खुदा
हम सब का खुदा तो एक हुआ ?
गर मैं मुस्लिम तो वो मुस्लिम
गर वो काफ़िर तो मैं काफ़िर
ऐ वायज़ अब घर जाओ तुम
नफ़रत का मौसम ख़त्म हुआ
मैं जिसके इश्क़ में ढूबा हूँ
वो मेरे रब का बंदा है।

# Bringing up Children in Interfaith Marriages

**- by -Zamrooda Khanday**

Children bring in a dynamic in marriage that one is not even remotely ready for and I have to say inter religion marriage is no different. I could sense this even before we got married. My partner and I had a long discussion on the name of the children (as we did for many other things) before we got married and it was amazing to see how we debated hard over something that did not happen for the next 6 years. Yes we fought and negotiated and fought and came to some consensus post it all. And I guess thats how we have negotiated our marriage and other things related to it for the last 18years.

How does one bring up children in our marriages…to sum it up in one line; just the way we do all other things, by our beliefs!

We got married because we fell in love with someone. We did not care for the religion. We met the person, fell in love and married in-spite of everything. If we did not consider religion while choosing a life partner then why are we doing so while bringing up our children?

Having said that , I have to be honest and say that in-spite of being non believers both Rajnish and I have not been able to dissociate with religion when it came to our lives. We do not believe and do not follow any rituals but we do follow festivals and the beliefs that both religion stand for.

From the first day of our marriage we have followed the festivals that we believed in and enjoyed from our respective religions. Celebrating Eid is a big thing in the house but fasting and offering a sacrifice is not. Similarly Diwali and Holi are big in the house but Puja is not and nor is Karva Cauth and Janmashtami and Navratras and all the other festivities that go with Hindu religion. We have lived in Maharashtra and so Ganpati puja become a big celebrations as our children associate with it. We have Bengali and Christian friends and so Durga Puja and Christmas are a part of our lives.

We have never stopped our children from participating in any festivities or religious celebrations in any of their friends houses. In fact we encourage it. We make it a point that if the children are invited we send them over and they are aware of what it is that they are going for.

Our children are 8 and 12 years old and often we have had to answer the question…what am I- a Hindu or a Muslim. Both Rajnish and I have always kept it simple. Your mother was born Muslim and father a Hindu. We both are non religious but believe in certain aspects of the religion and encourage you to do the same. Till you are adults you both are half Hindus and Muslims; after that feel free to adopt any religion you want or be atheist. That will be your choice.

Another question we are often asked is- if we believe in all religions then why do we not celebrate Christmas… children are intelligent and they do want Santa to visit them annually. Well again simply put; we celebrate enough festivals that are associated with Hinduism and Islam. Other than that you go and celebrate with your friends just the way they come to our house to celebrate Eid and Diwali!

Our Kids so far have been proud of the fact that they both Hindus and Muslims and that they can choose to be what they want or even not to.

There have been times that we have had tricky situations...recently when Trump put a ban on Muslim travellers to USA our son was very worried. One day he stated - Mom we cannot go to US anymore.

My response - Why?
Son - You me and Sehar cannot travel; we are Muslims and there is a ban now for Muslims to travel to USA.
Me - technically you and Sehar can travel with Daddy as your passport says you are Hindus.
Son- Really; why!!!
Me - Well when you children were born we had decided to put Hinduism as your religion as its easier in India to be Hindus than Muslims and also with wat was happening in the world we had thought it would be better to put Hinduism in religion.
Son - wow you are smart! But then we will not go. I will not want to go to a country that does not allow you in it.
Me- we will figure it out when we come to that time (there never was any plan to travel to USA)

Another situation- we are watching a movie in which there is a depiction of the burning ritual of the dead in Hinduism.
Sehar- Mom will I be burnt when I die?
Me- why are you asking that?
Sehar - In Hindus they burn you post death.
Me- well you can choose not to. You can ask to be buried or electrocuted as you wish.
Sehar - Can I?
Me- yes its entirely up to you how you want it.
Sehar- I am lucky to be half Muslim I can choose to be buried. I do not have to be burnt!

Educating children on the right etiquette has always been my thing. The fact that they can and cannot eat certain things in their grandparents and other relatives houses is a part of their upbringing. They are aware of what they can and cannot do in which part of the family. We do not want them to feel out of place when they are visiting any of their relatives. But yes things like touching feet of adults- we have issues with it. And since we do not believe in it ourselves we do not allow our children to follow it either. They have bene taught to greet everyone with a hug or a handshake as they feel comfortable. And that stays no matter what. Both Rajnish and I will not compromise with that. Covering head when in Puja rooms or temples and Mosques is a respect that they have to follow, even though Rajnish is not comfortable with it. If you are in a Puja taking parsed and applying the red tikka is a done thing and their is no debate on it. Little little things that matter to us and we believe in is what we teach our children.

But more than anything else the children are aware of why a religion is needed in our lives and what they stand for. They have read the abridged versions of Ramayana and Mahabharata and stories from Koran and Bible. Hopefully they are aware of what they stand for.

We have to keep our temper in check when we hear Ayaan say oh that dude who killed his son and that lazy fellow who' was sleeping and so on and on to remember that at one point in time we did refer to them in the same manner. Maybe we were not able to voice it or maybe we were lucky to be raised in India where Ramayana and Mahabratha and Eid rituals was not read to you. You were just born in them and inhaled them as you grew up and they became a part of you without ever realising it.

Both Rajnish and I believe that in life we need to believe in something higher than us. Some power greater than us to keep us grounded. And religion for us is that power. This is what we want to teach our children too and are trying our best. We have open discussions regarding every and anything in our house and our emphasis has always been - be the best human being that you can for there is nothing better than being humble and humane!

# SHIKWA

[As a sibling of a person who chose to be in an interfaith marriage, the author of this letter writes to his younger brother. While he supported the brother in his decision of choosing a partner from another faith, but with time, a distance seems to have come in even though the relationship of the younger one with parents does continue. While a lot of family related factors may have contributed to this change, the author hopes that the brothers would be able to rebuild the relationship that they once had. The author also advises his younger brother against leading a dual life where he and his wife change their way of being (names, daily rituals, etc.) in order to conform with parental expectations on both sides of families.]

Dear XYZ

कहाँ तुम बिछड़ गए !

कितने प्यारे और कितने अच्छे थे तुम. इज्जत भी बहुत करते थे तुम मेरी, हो सकता है अब भी करते हो. आज मैं तुम्हे एक बात याद दिलाना चाहता हूँ मेरे भाई, कि जब तुमने अपनी पसंद से शादी की थी तो वो हमारे पेरेंट्स और दूसरे फॅमिली मेंबर्स की नजर में वो जरूर एक गलत कदम था, मगर एक मैं ही था जिसने अकेले तुम्हे सपोर्ट किया. मेरे भाई तुम बिलकुल ये मत समझना कि मैं तुम पर अपना अहसान जता रहा हूँ और न ही मैं ऐसा सोचता हूँ कि उस वक्त मैंने तुम्हे सपोर्ट करके तुम पर कोई अहसान किया था. ये सिर्फ तुम्हारे लिए मेरा प्यार और मेरे खुले विचार थे जिसकी वजह से मैंने ये फैसला लिया कि मुझे तुमसे और तुम्हारी वाइफ से मिलना चाहिए. इसलिए मैं और तुम्हारी भाभी, शायद तुम्हे याद हो या न याद हो सेंट्रल मार्किट कि मक डोनाल्ड में तुम दोनों से मिलने आये थे. और उस मुलाकात कि बाद जब मैंने मम्मी पापा को फीडबैक दिया, तब तुम्हारी लाइफ में एक टर्निंग पॉइंट आया और तुम दोनों को घर वालों ने एक्सेप्ट किया. वैसे उस दिन भी तुमने एक बात पे दिल दुखाया था हमारा, खैर छोडो कोई बात नहीं. लेकिन हाँ मुझे इस बात की बड़ी खुशी है और रहेगी कि उस दिन से तुम दोनों फॅमिली में एक्सेप्ट कर लिए गए।

लेकिन हाँ, मैंने कभी ऐसा ख्याल –ओ–ख्वाब में भी नहीं सोचा था कि उसके बाद मैं तुम्हे खो दूंगा या तुम मुझसे जुदा हो जाओगे . मुझे इस बात की भी बेहद खुशी है कि तुमने बहुत कामयाबी हासिल की . मगर अफसोस ये है की तुम मुझसे दूर हो गए .

मगर मैं आज तक इसी शशो – पंज (कश –म–कश) में हूँ कि आखिर मुझसे ऐसी कौन सी गलती हुई कि तुम मुझसे इतने नाराज हो गए कि अब तुम कभी मिलने भी नहीं आते , या कभी फोन करके भी हाल चल लेना भी जरूरी नहीं समझते .

चलते चलते एक मश्वरा भी देना चाहता हूँ , उम्मीद है कि तुम जरूर समझने की कोशिश करोगे . देखो ये हम भी जानते हैं , हमारी फॅमिली भी और तकरीबन सारे रिलेटिव्स भी कि तुम दोनों एक डूअल लाइफ गुजर रहे हो जोकि बिलकुल ठीक नहीं है . न तुम्हारे लिए और न ही हमारी फॅमिली कि लिए और न ही हमारी आने वाली पीढ़ी कि लिए . होपफुल्ली ! तुम समझ गए होंगे कि मैं क्या कहना चाहता हूँ , और इससे ज्यादा मैं कहना भी नहीं चाहता इस मैटर पर. मेरे ख्याल से तुम समझ ही गए होंगे, कि मेरा इशारा किस तरफ है .

चलो खैर, तुम जहाँ भी रहो हमेशा खुश रहो और जिन्दगी में बे –इन्तहा कामयाबी हासिल करो . और हाँ, अगर कभी इत्तेफाक से मेरा ये 'शिकवा ' तुम तक पहुँच जाये तो इस पर जरूर गौर करना मेरा दर (गेट) और बाहें दोनों हमेशा खुले हैं तुम्हारे लिए .

Big B.

# ना जाने कब बुलाओगे !

**अकांक्षा**

सामने थी मंजिलें, रास्ते भी हसीं थे,
ना जाने फिर भी क्यों, चेहरे ये गमगीन थे,
सोचा था कभी तो, इस रिश्ते को मान जाओगे,
इस इंसान की खूबियां, कभी तो जान पाओगे.
ना तो मैं आवारा था, ना कोई दिलफेंक था
दिल मेरा मासूम था, इसमें ना फरेब था,
मन से गलतफहमियां, जाने कब निकलोगे,
एक बार फिर मुझे, कब प्यार से पुकारोगे.
मेरे लिए शादी तो, उम्मीद और आजादी थी,
उसमे ना हो मर्जी तो, जीवन की बस बर्बादी थी,
सोचा था मैंने इसलिए, की उसको ना बिगाड़ोगे
प्यार से हमेशा, मेरी जिंदगी सवारोगे.

अपनी जिंदगी का फैसला, मैं नहीं कर सकती थी,
कैसे मान जाती मैं, ये तो जबरदस्ती थी,
प्यार कितना करती तुमसे, जिस दिन जान जाओगे ,
खोये हुए वक्त पर, उस दिन पछताओगे .
पैरों में तुम्हारे वो, समाज की जो बेड़ियाँ थी
खुद से जुदा करने की, जाने क्या मजबूरियां थी
ऐसी बेड़ियों को ना जाने, कैसे तोड़ पाओगे,
दूरियों को अब मिटाने, जाने कब आओगे.
तुम्हारे पास नाटने को, बहाना सिर्फ एक था,
लेकिन मुस्लिम हुआ तो क्या, बंदा तो नेक था ,
धर्म – जात का मुखौटा, जाने कब उतरोगे,
हमारे इस समाज को, कब नर्क से उबारोगे.

# अंतर जतीय धार्मिक विवाहः मेरे विचार

**– नंदन कुमार मिश्रा**

प्रेम किसी जाति, धर्म, रंग, नस्ल, क्षेत्र, और औहदे को देखकर नहीं होता यदि कोई व्यक्ति किसी से प्रेम करता है और विवाह करना चाहता है, तो उसे पूर्णतः सामाजिक, सांस्कृतिक, एवम परिवारिक रूप से स्विकृति प्रदान होनी चाहिए क्योंकि प्रेम एक प्राकृतिक एवम सहज प्रक्रिया है, यह धर्म, जाति, नस्ल, रंग को देखकर नहीं होता है मेरा अनुभव और मेरे आस पास के लोगों से बातचीत से यह तो काफी स्पष्ट है कि लोगों में कयी गलत धारणाएँ तो हैं, लेकिन उनके बारे में खुल कर ना तो कोई संवाद करना चाहता है, और ना ही अपनी धारणाओं को चुनौती देना चाहता है सरकार, समाज, एवम मीडिया को समाज में अंतर जातीय धार्मिक विवाह के सन्दर्भ में जो गलत धारणाएँ लोगों में विद्यमान हैं, उन्हें चुनौती देने के लिए विभिन्न माध्यमों के जरिए लोगों में जागरूकता लानी चाहिए।

अंतर जातीय धार्मिक विवाह के अनेक फायदे हैं जैसे कि शोध से यह बात सामने आई है कि अपने समुदाय के बाहर विवाह करने वाले परिवारों में बच्चे ज्यादा स्वस्थ एवम बिना किसी जेनेटिक बीमारी के हों, इसकी ज्यादा संभावना है मेरा मानना है कि अंतर जातीय धार्मिक विवाह से लोगों में सामाजिक एवम सांस्कृतिक सौहार्द बढ़ेगा ईश्वर, अल्लाह सभी एक हैं – लोगों में सर्व धर्म संभाव की भावना जागृत होगी और जो हमारे देश में जाति एवम धर्म के नाम पर संघर्ष हैं, उसके खिलाफ राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक एवम क्षेत्रीय एकता बढ़ेगी।

---

*Nandan is a 27 years old social work professional working in Delhi. He is single and belongs to Benaras (Uttar Pradesh).*

# The sandal and sambar morning...

**- by Neelima Alam**

I peeped out lazily from under the thin bedsheet .. Trying to shield my eyes from the soft penetrating rays of early morning sun...the sun was trying hard to peep and enter from behind the semi- transparent curtains of the room... I could feel her moving softly in the house.. Her chudis and Payals tinkling softly..I could hear her moving in the room .. In a hush hush manner taking deep care not to wake me up. I knew it was Atta ( Atta means mami in Telugu .. As in thier culture we can marry mama's son)...so mom in law is Atta.. She wanted me to call her that so there I was...Atta...

And then few minutes later my room door was softly closed and then a dull sound of a Ghanti along with a prayer n shlokas could be heard., I could make out my in laws in the next door prayer room .. Following the daily routine of prayer and Aarti.. But everything was being done in a hush hush tone so as not to disturb the tired daughter in law who slept very late night..I quietly got up showered and crept out.. The familiar aroma of sambar and garlic seasoning was in the air.... Sandal essence with the Aarti was creating a soothing ambience...I loved mornings at my Hyd home.. There is something warm and soothing in air.. Went and sat down quietly in the prayer room on the rear end.. Few minutes later.. When Atta turned with her Thali and prasad .. I could see by the surprise and twinkle in her eyes that she was pleasantly surprised..the thali came to me.. Not sure what I am supposed to do .. I put my hands near the flame of the burning tiny diya and she put a red tika near my hair parting..it almost felt like sindoor..softly she whispered " Chala Bagundi ( means very good ) . She then happily said " come let's have coffee"...

While walking out of the prayer room suddenly I remembered the satisfaction and joy in my moms eyes when just to please her I first time read the Dua that she loves to hear in my voice..I could almost relate it with the twinkling in Atta's eyes that I saw today.. " bus yehi toh karna hai.. Chote chote pleasant surprises dene hai., if only we all can learn this .. All Bhasad can be sorted".. I smiled to myself and moved towards the kitchen for my morning cup of hot filter coffee...

# My marriage, nikah, and the idea of love jihad

**- Shweta Verma**

For women who choose their partners from a different faith or culture and against wishes of parents, marriage is only one step in the journey ahead. Of course, planning and preparing for this step itself can require a lot of hard work and planning. For instance, if you choose to get marriage using Special marriage Act (SMA), then it is a one month wait along with the fact that a letter with information about your marriage may reach your families and your information will be displayed on a notice board. These two did not really pose a problem for me. But they may create problems for other couples. And hence, it is probably not surprising that couples opt for a faith based ceremony to get over with the step of solemnization of marriage sooner rather than waiting for a month.

Sometimes (or often) of course, the couple also chooses to go through different rituals (of different faiths) in order to create balance or harmony with both sides of families. While there are advantages as well as disadvantages of this option, it may or may not really come as an option for some. At the end of the day, sometimes, we have to take decisions about what is more important? Is it more important to move ahead together as a couple with or without marriage? Is it more important to choose and assert the most neutral way of marriage even if it means delaying? I mean, ultimately why is the method or ritual so important in the process of marriage? I think each one would have a different response. And maybe how women view things vis a vis marriage today may be different from how men may view the same.

Marriage, for women, is still associated with adjustments or changes in one's identity or one's way of being. Women are still expected to be the ones who must accept and follow the culture followed by their partner's family. Respecting their culture is not enough. And parents of women know this. So, it is no wonder that parents have their worries - which are more than just about 'what will people say?' (log kya kahenge?). It is women who would eventually get asked the following questions, especially in an interfaith marriage:

Did you change your name?
What is your surname now?
Are you living with your in-laws?
What all do you have to do at home after marriage?
Do you get to visit your parents often?

Imagine the same questions being asked from men right after their marriage. And imagine how ridiculous these questions may seem to men!

I did not opt for a ritual based on my faith, but my partner's family wanted a ritual (nikah) aligning with their faith. And although I never wanted to go through it, I finally chose to because i felt that decision about this ritual was causing unnecessary delay in my marriage. There were few conditions from my side though. First, it was going to be just a ritual and did not mean that there was any change expected in me anyway. Second, no name change were to happen even as part of the ritual. Third, there was never going to be another expectation related to faith/religion practices of my partner past marriage. The ritual of nikah, however, did not hold any religious or legal value because we had already solemnised our marriage under SMA. And the kalma by itself cannot make me a practicing muslim. My partner, today, says that if he could go back to the time when we were planning our marriage, he would not make us go through the religious ritual (nikah). I appreciate this. And

I believe that he does understand my discomfort and the meaninglessness of that ritual. He has also noticed how others (the larger family and society) does not even remember our marriage anniversary even though the nikah was held for their sake!

So what did the religious ritual held for the sake of larger society and family achieve? Nothing else for me except for a few photographs and an occasion where my colleagues worked hard to turn it into a nice experience. But maybe it does achieve some things for others who opt for religious rituals. Or maybe it is not always an option that women get to select or reject. Maybe it is about deciding what is more important and rituals are just means to end of solemnizing a marriage. But for some (or many) women, rituals at the beginning of a marriage are also often about a beginning of a series of adjustments and compromises because who you are is not enough for the society. Maybe the society needs something extra for its own sake. But let us accept one fact: marriage and the ritual followed for marriage means different things to different people. You can understand the others' point of view only by talking to them. But then, would you call my marriage -'love jihad'? That would be ridiculous. That would be twisting my story a bit too much. And what do such phrases even mean? Phrases like 'love jihad', 'land jihad' and anything else like this that is used to label people and their choices. No, my marriage is not love jihad. But yes, it is an interfaith marriage. And we are a mixed family. We are not a hindu or a muslim family. And my son can choose to follow the faith or philosophy that he wants to, when he grows up.

But I would appreciate if you could remember the following

as well: I appreciate dialogue instead of random notions about interfaith marriages. But I am not a 'case' or a 'story'. I am a person who has made certain choices and I do not want to be known only on the basis of one of my choices. My marriage is not the most important event of my life. It is one in the series of events in my long journey. My identity is not 100% about my interfaith marriage even if that is how you might remember me.

# मेरी शादी, निकाह और मसला 'लव जिहाद' का

श्वेता वर्मा

जो महिलाएं किसी दूसरे मजहब या अलग संस्कृति से और अपने माता-पिता की इच्छाओं के खिलाफ जाकर अपना जोड़ीदार चुनने का फैसला लेती हैं, उनके लिए शादी एक लंबे सफर का सिर्फ पहला कदम होता है। बेशक, इस पहले कदम के लिए भी लंबी योजना और तैयारी की

जरूरत होती है। मसलन, अगर आप विशेष विवाह कानून (स्पेशल मैरिज ऐक्ट) के तहत शादी करने का फैसला लेते हैं तो आपको एक महीने तक इंतजार करना पड़ता है। आपको मालूम होता है कि इस एक महीने के दौरान आपकी शादी से संबंधित जानकारियों वाला खत आपके परिवारों के पास भी पहुंच सकता है। आपकी शादी के बारे में पूरी जानकारी नोटिस बोर्ड पर तो जाहिर कर ही दी जाएगी। मेरे लिए ये दोनों बातें कोई खास समस्या की नहीं थीं। मगर यही दोनों चीजें बहुत सारे जोड़ों के लिए अच्छी-खासी मुसीबत का सबब हो सकती हैं। इसीलिए, हैरानी की बात नहीं है कि बहुत सारे जोड़े एक महीने के इस झंझट से बचने के लिए ही धार्मिक रीति से शादी करने का फैसला लेते हैं।

कभी-कभी (या अकसर) कुछ जोड़े दोनों तरफ के परिवारों में संतुलन या समन्वय बनाने के लिए ही दोनों धर्मों के अनुष्ठानों का भी पालन करते हैं। इस विकल्प के फायदे हैं तो नुकसान भी हैं। कुछ जोड़ों के लिए विकल्प होता ही नहीं है। कई बार हमें इस आधार पर फैसला लेना पड़ता है कि हमारे लिए क्या ज्यादा महत्वपूर्ण है?क्या शादी करके या बिना शादी किए साथ चलना ज्यादा जरूरी है?क्या शादी का सबसे निरपेक्ष तरीका अपनाना ज्यादा महत्वपूर्ण है भले ही इसकी वजह से देर हो जाए?मेरे कहने का मतलब है कि शादी के मामले में कोई भी तरीका या अनुष्ठान इतना महत्वपूर्ण होता ही क्यों है?मेरे ख्याल में आप सभी की प्रतिक्रियाएं अलग-अलग होंगी। और हो सकता है कि शादी के मामले में आज औरतें जिस तरह चीजों को देखती हैं, वह पुरुषों के नजरिये से भिन्न भी हो सकता है।

औरतों के लिए शादी का खयाल आज भी अपनी पहचान या अपने वजूद में बदलावों या एडजस्टमेंट्स का एहसास साथ लिये आता है। आज भी औरतों से ही उम्मीद की जाती है कि वही अपने जोड़ीदार के परिवार की संस्कृति और रीति-रिवाजों को अपनाएंगी। उनके लिए उस संस्कृति का सम्मान करना भर काफी नहीं होता। लड़की के घर वाले भी इस बात को बखूबी जानते हैं। लिहाजा, ये अचंभे की बात नहीं है कि मां-बाप की अपनी चिंताएं होती हैं। ये चिंताएं 'लोग क्या कहेंगे' तक ही सीमित नहीं होतीं। अंत में लड़की से ही नीचे दिये गए सारे सवाल पूछे जाएंगे। अगर शादी अंतर्धार्मिक या अंतर्जातीय है तो उससे ये सवाल लाजिमी तौर पर पूछें जाएंगे :

क्या तुमने अपना नाम बदला?
अब तुम्हारा सरनेम क्या है?
क्या तुम अपने सास-ससुर के साथ रह रही हो?
शादी के बाद तुम्हें क्या-क्या करना पड़ता है?
क्या तुम आसानी से मायके जा पाती हो?

क्या शादी के बाद किसी लड़के से भी इसी तरह के सवाल पूछे जाते हैं?और कल्पना कीजिए कि लड़कों को ये सवाल कितने वाहियात मालूम पड़ते होंगे!

क्या शादी के बाद किसी लड़के से भी इसी तरह के सवाल पूछे जाते हैं?और कल्पना कीजिए कि लड़कों को ये सवाल कितने वाहियात मालूम पड़ते होंगे!

खैर, मैंने तय किया कि मैं अपने धर्म के अनुष्ठानों का पालन नहीं करूंगी। मगर मेरे जोड़ीदार के परिवार वाले अपने मजहब के मुताबिक अनुष्ठान (निकाह) करना चाहते थे। हालांकि मैं कभी इसके लिए इच्छुक नहीं थी मगर मैंने इस पर हां कर दी। मुझे लगा कि इस एक रस्म को लेकर मेरी शादी में बेवजह देरी हो रही है। कुछ शर्तें मेरे घरवालों की तरफ से भी थीं। पहली शर्त ये थी कि निकाह सिर्फ एक रस्म होगा। इसका मतलब यह नहीं माना जाएगा कि उसके बाद मेरी शख्शियत में किसी तरह का कोई बदलाव आ जाएगा। दूसरी शर्त, निकाह के हिस्से के तौर पर भी मेरे नाम में कोई बदलाव नहीं होगा। तीसरी शर्त, शादी के बाद मेरे जोड़ीदार के धर्म से संबंधित और कोई उम्मीद न रखी जाए। खैर, निकाह की रस्म का कोई धार्मिक या कानूनी महत्व नहीं था क्योंकि विशेष विवाह कानून के तहत हम पहले शादी दर्ज करा चुके थे। न ही मैं सिर्फ कलमा पढ़ने से मुसलमान बन सकती थी। आज मेरा जोड़ीदार कहता है कि अगर हम वो बीता वक्त वापस ला पाते जब हम शादी की योजना बना रहे थे तो मुझे इस धार्मिक रस्म से गुजरने के लिए कतई न कहते। मुझे उनकी ये बात अच्छी लगती है। मुझे लगता है कि वह भी उस रस्म की निरर्थकता और उसकी वजह से मेरे भीतर पैदा हुई बेचैनी को समझ सकते हैं। उन्होंने इस बात को भी समझा है कि अब दूसरे लोगों को (हमारे कुनबे-कुटुम्ब और समाज) को याद तक नहीं है कि हमारी शादी की सालगिरह कब आती है हालांकि निकाह का सारा हंगामा उन्हीं की तसल्ली के लिए हुआ था!

तो फिर समाज और परिवार को इस धार्मिक रस्म से क्या हासिल हुआ?मेरे लिए तो चंद तस्वीरों के अलावा इसका सिर्फ यह मतलब था कि मेरे दोस्तों ने इस मौके को खुशनुमा बनाने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी

थी। फिर भी, शायद धार्मिक रस्मों को अपनाने वाले दूसरों के लिए इसका कोई मतलब हो भी। या, हो सकता है कि सारी औरतों को यह विकल्प मिलता ही न हो कि वे किसी विकल्प को चुनें या खारिज करें। शायद इस का आशय इस बात से है कि क्या ज्यादा अहम है और रीति-रिवाज तो सिर्फ शादी को मुकम्मल कराने का सिर्फ एक जरिया भर हैं। कुछ महिलाओं (या बहुत सारी महिलाओं) के लिए शादी की शुरुआत में होने वाली रस्में भी बहुत सारे एडजस्टमेंट्स और समझौतों के लंबे सिलसिले की शुरुआत भर होते हैं क्योंकि समाज के लिए सिर्फ यह जानना ही काफी नहीं होता कि आप कौन हैं। शायद समाज अपनी ही तसल्ली के लिए सब कुछ चाहता है। मगर हमें इस बात को स्वीकार कर लेना चाहिए : शादी और उसके लिए अपनायी जाने वाली रस्मों का सबके लिए अलग-अलग मतलब होता है। आप लोगों के नजरिये को सिर्फ उनसे बात करके ही जान सकते हैं। मगर, क्या आप मेरी शादी को 'लव जिहाद' कहेंगे? ये बात तो सुन कर ही वाहियात लगती है। ये मेरी कहानी को तोड़-मरोड़ देने वाली बात होगी। वैसे इस तरह के जुमलों का मतलब क्या होता है? 'लव जिहाद', 'लैंड जिहाद', इसी तरह के और भी जुमले हैं जो बहुत सारे लोगों और उनकी पसंद-नापसंद के फैसलों पर चस्पां कर दिए जाते हैं। जी नहीं, मेरी शादी लव जिहाद नहीं है। यह एक अंतर्धार्मिक शादी है और हमारा परिवार एक मिश्रित परिवार है। न तो हम हिंदू परिवार हैं और न ही मुस्लिम परिवार हैं। मेरा बेटा बड़ा होकर जिस भी धर्म या दर्शन को अपनाना चाहे, अपना सकेगा।

हो सके तो इस बात को भी याद रख लें : मैं अंतर्धार्मिक शादियों के बारे में प्रचलित धारणाओं की बजाय संवाद को ज्यादा प्राथमिकता देती हूं। मैं कोई 'केस' या 'स्टोरी' नहीं हूं। मैं एक जीती-जागती मनुष्य हूं जिसने कुछ खास फैसले लिए और मैं नहीं चाहती कि मुझे सिर्फ मेरे किसी एक फैसले के आधार पर जाना जाए। मेरी शादी मेरी जिंदगी का सबसे अहम घटना नहीं थी। यह मेरी जिंदगी के लंबे सफर में घटी बहुत सारी घटनाओं में से एक घटना थी। मेरी पहचान सिर्फ मेरी अंतर्धार्मिक शादी से तय नहीं होती भले ही आप मुझे सिर्फ इसी एवज में याद रखते हों।

## Defeat their Agenda, Know it is Propaganda

**Vasuda Arora**

You can no longer decide
What you can eat
There is a war symbolized by
Vegetables vs. meat

If you are in Goa
Kerala or North East
You can eat the cow
Without being called a beast

In other parts of India
We take the high moral ground
Where violence , hypocrisy
and intolerance abound

Words like patriotism and nationalism
Misapplied and misused

We need to be aware of
How they are construed

Leaders of the state
Have a hidden agenda
They fulfill it smoothly
by using propaganda

An eye for an eye
The need to avenge
The endless cycle
Of ruthless revenge

Building on hurt
anguish and pain
Experienced centuries back
Is pointless and insane

Take back your freedom
Come back to your senses.
Let go of the divisions
The 'us and them' lenses

Respectful co-existence is possible
Is what we grew up hearing
To uphold these cherished ideals
We require to be daring

Get out of our wells
Broaden our mind
Redefine what it means
To be tolerant and kind

# 'आवारा'

— इमारा

मेरे लेख का शीर्षक 'आवारा' एक खास वजह से रखा गया है। चलिये पहले इसे ही बता दिया जाए। जब मैं छोटी थी और अपनी मर्जी की चीजें किया करती थी, जैसे सामने वाली सहेली के साथ घंटो बात बनाना-खेलना,बड़ी ताई जी के यहाँ चोरी-छिपे टी६वी६ देखने जाना या घर में भाई से गैर बराबरी पर लड़ जाना, इन्हीं सब चीजो के लिये मेरी अम्मी मुझे 'आवारा' कहा करती थीं। मतलब कोई भी अपने मन की, पसंद की या ज्यादा बोलना आवारा होना था। और आज इसी शब्द का इस्तेमाल इसलिये किया गया है कि मैं अब अपनी पूरी जिंदगी अपनी मर्जी,अपनी पसंद से जी रही हूँ और जीने के लिये संघर्षरत हूँ।

मुझे खुद को याद नहीं कि मेरी २५ साल की उम्र में सबसे संघर्ष-भरा, कठिनाई भरा या कहें ऐसा यादगार दिन जिस दिन मैं सबसे ज्यादा परेशान थी और मुझे समझ नहीं आ रहा हो कि अब क्या करना चाहिये ब्लाह...ब्लाह... इसका मतलब तो समझ ही गये होंगे कि जिन्दगी के हर मोड़ पर ऐसे अनगिनत दिन आये इसलिये किसी खास दिन कि घटना की मेरी कोई कहानी नही है, हाँ इसे छोड़कर कि मेरा बलात्कार हो गया हो या मुझे मारने की कोशिश की जा रही हो ये अभी बचा रहा है और इसके लिये भी मैं अपने आपको मजबूत करती हूं, सोचती हूँ ऐसा होगा तो क्या करूँगी मेरे साथ या मेरे सामने किसी और के साथ। हर दिन, हर महीना, साल-दर-साल मुझे कड़ी मेहनत के साथ अपनों जिन्होंने मुझे पैदा किया और समाज के सामने साबित करना पड़ रहा है कि "मैं पढ़ना चाहती हूँ" बस।

इसी एक लाइन की धुन सवार किये मैं जिन्दगी के हर उस मंजर को देखना चाहती थी जो मुझे पसंद।

महिला संगठन से जुड़कर उनकी खुद की जिंदगी की अहमियत बताते हुये, लोगों (हमउम्र दोस्तों) को जिन्दगी की गंभीरता को समझाते हुये, परिवार-रिश्तेदार और समाज से लड़ते-झगड़ते,संघर्ष करते हुऐ मैंने अपने आपको मजबूत बनाया, और आखिर एक दिन घर वालों की शर्त मानने के बजाये, मैन घर छोड़ दिया। सही-गलत समझाने वाले दोस्त ज्यादा साथ नहीं दे पाये फिर आहिर अकेली खड़ी 'इमारा' जिसका मुझे पता भी नहीं था कि ऐसा होगा तो मैं क्या करूँगी।

ऊपर की सारी बातें इसलिये नहीं लिखीं कि ये कोई जंग चल रही थी और हाँ कोई गुलामी भी साफ नहीं दिख रही थी, लेकिन निरंतर संघर्ष था। तो क्या था वो संघर्ष, किसलिये था वो संघर्ष अपनों से जंग छेड़ रखी थी, इन सबका एक जवाब "राइट टू चह्इस" यानि अपनी मर्जी से पहनना, अपनी मर्जी से खाना,अपनी मर्जी से पढ़ना कि क्या पढ़ना है और क्या नहीं, क्या बनना है और क्या नहीं, किससे मिलना है, किससे रिश्तेदारी निभानी है किससे नहीं, मानवता होनी चहिये लेकिन कितनी होनी चहिये इत्यादि। और ये कहानी किसी एक लड़की की नहीं है हर लड़की की कहानी है जिसने इस कहानी को अपनी जिंदगी में समझ लिया उसने संघर्ष का नाम दिया और जो नहीं समझ पाया या समझना नहीं चाह रहा उसने किस्मत का नाम दे दिया लेकिन अब सवाल ये है कि जो लड़की सब अपनी पसंद और अपनी मर्जी से जीने के संघर्ष में हो तो क्या वो अपनी नापसंद इंसान के साथ अपनी जिंदगी बिताएगी जो शादी जैसी परंपरा के नाम पर बांध दिया जाता है, नहीं कभी नहीं। जाति-धर्म, ऊंच-नीच से परे अपनी पसंद का एक रिश्ता जो सिर्फ दो इंसानों (लड़का-लड़की) की राइट टू चह्इस से बनता है। ऐसे ही एक रिश्ते के साथ हम दो धर्मो में पैदा हुए लोग एक साथ रहने का फैसला करके साथ हैं। संघर्ष जारी है परिवार, समाज और धर्मान्तों का लेकिन...

उस पार है उम्मीदों और उजास की
एक पूरी दुनिया
अंधेरा तो सिर्फ देहरी पर है।

# Sab badal gya....kyun badal gya....?

**Shabana**

I found this doodle in my daughter's diary when she was 8. On the back page of her r

I was never taught in my family to discriminate people on basis of religion, caste, colour or creed, until it came to my choice of marrying a Hindu boy. Then too no hatred was shown but just a meek nonacceptance and resistance was shown by my family. Nobody said they are not good people and thus you shouldn't marry them. They just said the boy is good enough but marriages are suppose to be in same religion. There was no reason for me to hate any other community. I have friends from all religions and communities and they all love me and I love them equally.

This was the reason I guess for me marrying my love interest after all resistance from family. Now by this I don't mean that to avoid such interfaith marriages we should instill hatred for other religions in our children. It is just that nothing made me or my family hate the other religion, not even my marrying in another faith. They were just angry with their child for disobeying them.

Even after my marriage I had to face lot of resistance in my husband's family. For years, I was not accepted in that family. Still it did not instill any hatred for other religions in me. I just took the entire nonacceptance as a resistance of love marriage in family, even though at many places, they very clearly stated that Muslims are considered way below their community and Hindus are best amongst all. Still it felt to me as all this anger was towards the noncompliance of their son and not as hatred towards my community.

It took long but after around ten years I was gradually feeling as a member of the family just like any other. So, even this could not become a reason of me disliking other religions. I wonder what circumstances are those, which make others do so.

Meanwhile a lot happened and changed in the world. Things like Godhra and Gujarat riots were also there which shook me from inside. This too didn't instill hatred in me for other communities. I took it as a mean act from few politicians who in the greed of more power led the society towards all this. I thank my upbringing for keeping me strong and not

allowing my brain to get contaminated by hatred.

I realize I saw the world with my own eyes and interpreted it accordingly and stayed strong. I feel good about it. I never wanted to hate anyone, thus, I kept my eyes closed towards the hatred even when I was getting or if you say my community was getting it. I wonder how the hate mongers instill hate in others. Does any pre- existence lies inside the hearts or any insecurity does this all?

Now a day, we all know our country is going through a not-so-good phase or we can say a difficult phase, which according to some is good for a particular community and difficult for another. Why am I able to take it as a phase for whole country and few others are not?

Recently a conversation with one of my closest friend shook me from inside when she very proudly shared it with me that this is kind of renaissance period for the country and she is proud of our top politicians for leading to it. I guess you can make out what I'm referring to here. She proudly accepted that even if people are being killed for it that is ok. Though she did not directly approve of it but claimed it as it was justifiable. She took it as a 'badla' of things happening in past. I cried when people from her community died, but she is not even upset when the other community people are being ruthlessly killed by her own community people. It is being taken as empowerment. I was more shocked that without any hesitance she was able to share this in front of me. I know she loves me but was not worried that it will hurt me. Did she take me and my love for granted? This was little scary. Politicians couldn't do this but my friend was able to instill all the fear in me. And when I shared my feeling with her she so easily expressed, “It happens with minority always. If I would have been the minority you would have done it to me.” My whole notion of being safe in secular country like India vanished in a moment. The India of my dreams and my upbringing has changed.

My family and my religion taught me to love my motherland, respect it from core of my heart. We were taught to die for the country in whatever circumstance your country needs you. They taught me that your motherland loves you. Has my motherland changed? Why has it changed?

I love my motherland and will love it till my last breath. This is what I teach my sons. I wish I am able to keep their mind away from all the contamination from current hatred in our country. May Allah be with us. I'm scared but have not lost hope. I have faith in my constitution and I know love will prevail.

Say NO to #ForcedMarriage
You have the Right to Choose:
WHO you want to marry,
WHEN you want to marry,
OR IF you WANT to marry at all!
dhanak

## Pledge for humanity

I take this vow today
That, with every individual
I will have a relation of humanity.

I will not differentiate with any individual
over caste,
religion,
colour,
language,
region,
sex etc.

Neither will I consider myself superior or inferior
due to societal differences.

I will not hate anybody elder to me
due to difference of opinion

And

I will always allow
those younger than me
to put across their views
and thoughts without any fear.

I will never resort to violence
in human relations.
My every thought and deed
will be based on human values.

Long live Humanity
Long live Equality
Long live Peace
Long live Love
Long live Humanism

## इंसानियत की शपथ

मैं आज ये प्रण लेती हूँ
कि, मैं हर शख्स से
इंसानियत का रिश्ता रखूँगी

मैं किसी भी शख्स से उसकी
ज़ाति,
धर्म,
रंग,
भाषा,
वर्ग,
क्षेत्र,
लिंग
आदि के कारण

कोई भेद–भाव नही करुँगीं
और ना ही अपने को
समाज निर्मित
भेद–भावों के आधार पर
ऊँचा

या नींचा मानूँगी

मैं आयु में बड़ों से
विचारों मे मत भेद के कारण घृणा नहीं करुँगी
और छोटों को बे– खौफ सवाल पूंछने
और विचार रखने का हमेशा मौका दूँगी

मैं इंसानी रिश्तों मे
हिंसा का प्रयोग
कभी नहीं करुँगी

मेरी हर सोच
और कर्म
मानवीय मूल्यों पर
आधारित रहेगी

इंसानियत ..... ज़िन्दाबाद
बराबरी ..... ज़िन्दाबाद
शांति ..... ज़िन्दाबाद
प्रेम ..... ज़िन्दाबाद
मानवीय एकता ..... ज़िन्दाबाद

* Hindi translation by Yogendra Datt

dhanak
E-163, Street No. – 3, West Vinod Nagar, Delhi – 110092
Email: dhanak04@rediffmail.com Website: www.dhanak.org.in
Facebook: www.facebook.com/dhanak.interfaithmarriages

* For private circulation only.